৩১৩৪

... ২০-১১-৩৫

Price ... ৩-১৫

860.2
·1

[illegible]

[illegible]

पृष्ठ ८४.   कि. ३॥।=

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ अथ श्री कृष्णजी रो ब्याहलो
लिख्यते ॥ दूहा: ॥ विघ्न हरण मंगल करण ॥ होत बुध
प्रकास ॥ मंगल होत गणपत के होत दुष्ट को नास ॥१॥
विघन हरण मंगल करण ॥ तुलछी रीता राम ॥ अष्ट
सिद्ध नव निद्ध के ॥ वरदायक हनुमान ॥२॥ सदा भवानी
दाहने । सन्मुख होत गणेस ॥ ए पांच देव रिक्षा करै ॥
ता ब्रमा विष्णु महेस ॥३॥ याद कीयो तेली पदमीयो ॥
दीयो दिवांन बंदाय ॥ आग्या दई श्री भगतनै । पीतंबर
पीडराय । ४ ॥ व्रंदावन से वन नहीं । नंद गांव से गांव ॥
बंसी भट से भट नही ॥ कृष्ण नांव से नांव । ५ ॥ वृंदावन
बांन ॥ बन्यौ ॥ भवर करत गुंजार ॥ दुलहन रांणी रुकमण
दुलो नंद कुमार । ६ ॥ याद कीयो तेली पदमीयो ॥
दीयो दिवांन बिंदाय । स भमरा भरौ सुणो कृष्ण जी ।
सुणीयों जादवराया: । ७ ॥ सो मंगल प्रगट करो ॥
समभर करो वखांण: । कृष्ण भरौ सुणो पदमीया ॥
सुण जो भगत सुजांण । सो मंगल प्रगट करो ।

समझर करो वखांरा॥ प्रदम भरो सुरगो कृष्ण जी।
रुकमरा दीजो मोहल॥ ज्याय पधारो कुंजना पुरी॥
सब जादव ले साथ। रुकमरा मंगल जो सुरगौ। सो
वैकुंठ जाय॥ कायोरा पातंक भडै॥ पाप विलै
हुय जाय। जोता भगोत सुरो। रुकमरा मंगल एक।
नर नारी गावै सुरौं। मन में ध्यांरा विवेक॥ ढाल
ब्याहलैरी॥ पावां तो लागां तेली परमीयो॥ ॥जहां
वैठा रुकमरी जादु राय॥ आग्या दई श्री भगतनें॥
पितांबर पोहराय॥ प्रथम परमेस्वर विनवुं॥ लागु
नें गुरांरै जी पाय॥ कृपा करो म्हांतो हरे। गाउं
थांरी लील वराय॥ श्री कृष्ण तरोज व्याहलो।
परगीया जे पतसार। गुर गोविंद दोनु खरा॥ किसै
कै लागु पाय। मं बलहारी गुर आपरगा॥ जिरगा
गोविंद दियो वताय। गुरु नारायरगा कृपा कीनी
गोविंद दियो वताय॥ चंद सूर्य दोय चरवीया॥
चरण्या धररगी प्रकास॥ वास गाड पर धरती

चरधी ॥ जल पाताल चलाया। ज्यौं ज्यौं मीठ पडी मगता
में ॥ गरड चढी हर आया ॥ पदम भरों भराते पाय
लागु ॥ दिनार रैस्या दरसाया ॥ रावजी रसां वास पधारीया
आगै मीलीया सहेलीयांरो साथ। रावजी भरो है
सहेलडां ॥ कुंराजीरा राज कुवार ॥ आता छै बाई
रुषमणी ॥ राजा भीवजीरी राज कुंवार ॥ पडदै राखी
रुषमणी। कीयारां रैयां नांव अनाव ॥ जां घर
कंन्या कवारीया ॥ जां राज नाम अकारथ जाय ॥
घररा विप्र बुलायीया ॥ विप्रां वेद विचार ॥ विप्रां
आयर वेद विचारो। वेद वायक नहीं सुझै ॥ देवो
लिषि बाईरे दीजो। साइब तणो परवेस ॥ तिलबंधती
बाई जव वधै। रुषमणी छै अवतार। सात वरस मैं बई
रुषमणी ॥ चंता सोच निवार। सात वरस जुग सात
भरोा। नव रस जुग एक ॥ उतर बारु भयो तेरवो। धोला
पडै नर केस। राजा भीव मन चिंता उपनी। अन
नीर नहीं भावै। नैरां नींद पलक नहीं आवै।

जिस दिन रैंरा विहोवें ॥ इरा चंदावल रै कारणें ॥
नैंरणां नींद न आवें राजा भीवजीरें पांच पुत्र हैं॥
बडो वडोज रुघम कवार ॥ पदम मरो मरावें पाय
लागु ॥ राजा सुत नतलावें । राजी सुत नतलावें ।
राजी सुत भेला हुवा । सोच कयेडी भाइ ॥ भीवजी
मरों रे सुत मांहरा । सुरा जो रुघम कवार । रुघम
कवर वड हुवो ॥ वर ढुंढरा विप्र बुलाया । कवर
सुरों सुरगो राजाजी ॥ सुरमीयो राजधिराज ॥
पीतां वैठां तो डोला चलें ॥ आय वडा महाराज । भीव
मरों रै सुत मांहरा ॥ वर धांने मं वताय गढ
मथरा हर जन्मीया । नंद घरां अवतार ॥ वसुदेव
घरां अवतार : । दोरगु सबे सिंघारीया ॥ अगल
हेल अवतार । सीता परणीं सांवरे ॥ दसरथ राज
कवार ॥ वंदर रीछ वुलाइया ॥ जल पर सीला
तीराय ॥ कुंभ करण रांवण मारीया ॥ असरां
कीया सिंघार । सीको वांनें वंदाय । सांसी

सिर उपाबरा होर। कव्र भरौ सुराँ राजाजी॥
थांरी तो सफल बुध ग्रह। गउ चारवै बाबे नंद की।
भलो सरयो अहीर॥ भीव भरौ रे सुत म्हांरा। हरजी-
नै र हला न बोल। पहिलै परवाडै इर इरी पुतना। मल
मड दांणु मारया। कंस केस सोंडुर पछारया॥ हरीया
असर सिंघारया। गोकल धणो डी गवालीयै॥ मडवाल्यांरे
सांग। समद तरौ सारवौ जाय बैठो। उरतो वाहा
नहीं आवे॥ भीतजी भरौ रे सुत मांहरा। हरजीनैं
रहला न बोल। जमना जाय काली नाग नाथीयो।
इजगरो नल जीतो॥ भीषम राज भरौ रुषमईय
जादु जु गांव दीता। परसरा कालो बोलें कुडो।
मन में भरै अपमांन॥ उरारे तो कुबरी म्हांनैं
संतयी आवै। गवालन मोहत डोलै। न टोर भैंस
गुजरी गो है॥ भलो सरायो कांनो। दध माखरा को
चोर गवालीयो। नहीं मोसुं छानो॥ चार कुंट
नव खंभ बिचालै। लपै डाल सिस पालो॥ री को बांनै
सिंदायसां॥ वे इ चंदेरी रा राव। परमें भरौ भरावै

पाय लागुं। सांसी सुत वतलावें ॥४॥ नमक

कलोई जर उठीयो। माता सें वतलाय। राजी

राग परा ओर करवें ॥ तोय कांई मन भावें।

पडयें सांसी वतलाय जी। सुरा हो नरे सर राय।

थांहरो तो ताप उर गयो॥ सुतो करतो कोट उपाय

करता कोट उपाय नरेसर ॥ कुल में ओछी आंसी।

कन्या बडी वर बालक हे रयो॥ वात कुमारी में जांणी

जात ओजस सें न्यारा रहीयें॥ थीस कवर लिख दीजे॥

रुपम कवर थांरे कुलरो मंडरा॥ बेठी जेवो रहो।

गल पीहरो कुलकीरी माली। वे ठ विलन पद गावो

पद भरो मनावे पाय लागु। सांसी सुत से वतलावे

राजी मेरी मात सें मिल वात कीनी॥ कीया गुंम्फ

अपा रहो॥ बाई रुपमणीरो लग्न लेडे॥ राजा भीवरो

भुपाल। राजी राजी रुपम कवर सील पाल जी नें॥

लिखें छे कुंअ अपार हो। सरसत भाटज वेग बुलावो

कुरी अपमोलक दिराय।। राजी राजी हरख्यो कुंजनपु

रो हो सारो॥ गावें छे मंगल चार॥ हरख्यो सांसी

हरषी कुंजन पुरी कांमणी। जो गावे मंगल चार।

रूप भई थे। गावै छै मंगलचार। पदमइयो कहे दोय

दुलबा। राजा भीव ओर बाई रुपमती। ७।मार जो विप्र

बुलाईयो॥ वैमोलग्न लिखाय॥ कागद कलम कवारसा।

देवो। मीडा हल ने जाय। कहे कवर जी सुंणो सुरसतजी॥

एक अरज अब म्होरी॥ विरत टालें सुं वातन काजो॥

कर सुं कागद दीजो। सरसत मारज अखी यां। वैमोलग्न

लीयो उठाय॥ तीलक वीनासे पांडीयो। मील्यौं अगाउ

आय। मुंडी मुंछरी मीलो मांडीयो॥ मुंग घरांरो

गडो। इतै महुर्त लग्न लिख्यो छै। रहै कवारो लाडो।

मुंडी मुंछरा मिल्या मोडीया॥ ल्योली भरख जुंनारा॥

मुंधें चडै पिरगडोर मिलगी॥ सुंगन हुया वेकारा।

सूल अरेरती विधवा मिलगी॥ मुंधा कलीया नगारा।

बांसा चुगती विधवा मिलगी। बुरी मार मुंड फोडा॥

६। पटक बुरी जब चंचल चाले: डंड फोचरी वाले।

सरसत मारज मारग मैं उभो पगकुं चायल अडे॥

डावी मलो न जीमरणा॥ पगड जोवरी जीं न। महांने सुगन भलेरा होयजो।। पड जोवररी जींत। सुर सत भार जो करे वीनती॥ नमहो सुंरज देव। सुंरज देवजी पे पडा। धरतीरा कहीजो दीप। महे तो चाकर थुनरा। म्हांरी साह करीजो। पदम भरों भलों पाय लागु। सुंगन डाह सीर दीजो॥२॥ तखत चंदेरी पो नीजो। भीतर भेद सुणाय॥ कागद लखम कवीर सीं दीयो सीत पाले नें जाय॥ दुलो राव भलों सीत पालों। पुत कठासुं आयो॥ लखम कवरजी बंधाई यो:॥ कुजना कुंवर सुं आयो॥ सुंलत भार ज कुंज भों टीको डाहलनें लावें॥ डाभीं राव लिल पालजी तखत चंदेरी रा राजी॥ डाभी चंदेरी री कांमणी: जो गावे छे मंगल चार॥ पोडपा जोशी वेग बुलोवो॥ लग्न लेवो बचवाय। पा होवा जोशी आली या। रंग तखत नें आयो कुंजना पुररा कागद आयो। महांने वाच सुणावो। पा होये कागद

बांच सुणायो। मींत मंत्र घन सारा। इसै महुर्त लग्न
लिख्यो छै ॥ भाज आतो चाला। दुला राव भरो सीस-
पाले॥ थांभा बांस दिरावों ॥ अकाल मष आ बुढो बांभण।
और ज विप्र बुलावो रांमदो जोसी वेग बुलावो॥ लग्न लेवो
वचवाय:। सभा चातक पिंडत आयो। सभा देष कर
बोलै। सभा देष कर पिंडत बोलै॥ कागद बांच
सुणावै॥ रामदे कागद बांच सुणायो:। मुल मंत्र घन
सारा। इसै महुर्त लग्न लिख्यो छै॥ लिखतां पंचक लागा।
सांडस मोड रनालो कंचनरो:॥ ब्रांह्मणानै दिवरावो।
पद भोंगै भरावै पायें लागुं। वेगो लगन लिखावो॥९॥
चोको वेग दिरायदो। सोवरन कलस भराय:॥ कनक
कटौरै भाटजीनै घी घलो॥ हरीया मुंग मंडोहरा। उजल
चीवल लाय॥ चुलैंच रूच छायदो। उना गरम कराय।
कनक कटोरै भाटजी नै घी घलो॥ षीरसो मेदा भांत॥
कुंजन पुरसै भाटनें। अब कपरू सोनी दाल:। सषरा
सषरा घृत मंगावै मिठडा भोजन लावो॥ कुंजन पुरसै

मारनें। मुष मांगैलुं दिरावो। पांच लात चुडलाले रीजो
घरणा मनोरथ कीजो॥ कुंजनापुररै मारनें। मुष मांगै
लौं दीजो॥ पदम भोमै भरावै पाय लागु॥ भली भांत
बीरा कीजो। तीलपालो मैल पधारीयो। भावज ले
वत लायो॥ कुजनापुररा कागद आया:॥ थांरै
कांई मन आयो॥ मैं तनें बरजुं हो सीलपाला॥
कुंजना पुर मत जावो॥ वा लछमी हररी अर धायाः।
क्यांनें लोक हसावो॥ राजा भीव जसो नांव नही छै।
सरै नही कोई काजो॥ दुलोराव आगै हील पालो
आभी भीतर जावो। कायर मुंछ नहीं आभीजी॥ सुतो
मांन बधावो। बडां घरांरा गुमर का छो॥ जैम
मनो हो कहावो। म्है कुंजना पुर करां साबती।
काजल थांहरो राषो:। हरष सील पालो मैलपधार
उतरते पिछतावे॥ बोरी वाड पलासरी॥ बिन छेड
घर लावै नुगरी भावज छेडतां। पत सुगरांरी
जावै। रंग म्हैल मैं भावज बतलावै। तीलपा

नें फेर बुलावो ॥ मुष वचनें मांनें नही डाहल ॥ कागद लिष समझावे ॥ कागद लिषतां कियो निहोरो मांहांरो नही देवर सारो ॥ चंद्र भोम कुंजना पुर जागे ॥ करम कुजरगे चारो । पदम भगे मनावें पाय लागु ॥ वेगी जोन परगावो ॥ ११ ॥ गादी जुरासंधरी कागद गेस्यां पें जाय ॥ दानुं राजा जीग पति ॥ बैठा तषत बिछाय । राजजी भगे सुंरगा रावजी । सुंगो जरासंध राव । जारं तो घर मैं राजा दोय मता ॥ कुंसल कठासुं होय । राजा भीवजीरो नांव नही छे । नांव छे रुषम कवारसे लोच कचेडीरे मांह ॥ जद जरा संघ बोली यो मुछां हाथ लगाय ॥ परसीं भीव कुंमारनें ॥ तो जरासंध नांव ॥ भावज बेठी रंग महलमें । देवरनें समझावोरे । म्हांरे कोई देवर नें समझावोरे भावज कहै सुरगा सील-पाला ॥ कुंजना पुर मत जावो । देलरा भूप मरोसो ॥ घर घर गाल कढावोरे ॥ हां रे देवर घर घर नवांह

पीहरावोरे। कै सीस पालो सुरा है भावज।। इसा
वचन मत भाषो।। भीव कवर ने परसा पधारो।
जद चंदेरी मे आनो। डांरे भावज आवांरे।। भावज
कहै सुरा सीस पाली।। देता ढोली पालोरे।। डांरे
देवर मुंड ढोली कालोरे।। पदम मरो मरावे पाय
लागु।। मुंगी वीर करावोरे।। डांरे देव घर घर सुं
बोहि पीहरावोरे।। ।श्री। ।।सिद्ध श्री सर उपमा।
राज श्री गुरा शाय।। तषत चंदेरीरा राजावी। नैंरा
लिषे छै गुंम्फ अपार।। चीसी पहुं चित भेज दो।। करो
हलो हल जांन। च्यार षुंट नव षंड विचाले।। सारे
ही नैं तो फीरावो। समदर मैं भडवाल्या गजा लीया।।
उणरे मत कोई जावो। सेत बंदरां मेलस्य ढोयाँ।। असी
लाष विंमांरा:। दोली दीप कुल मंडरा राजा। पलटरा
लाष पचास।। रावड डेपै चंगालैरो राजा।। अली
लाष मद मंता।। अली लाष मद मंता हाथी।। वे है

कुंजन सिरगागारो॥ बगतर टोप जो अनंत भराया।
ताहु को अनंत न पार॥ दषण देस अर पछम
देसरा॥ मझ देसरा बुलावो।उत्तर देस अर पूरब
देसरा॥ सोरठ देस बुलावो। गादी हरण कुरसी
सब राजा चढ आवो। पंगां चाल तीस सब चढ
आवो। जरसंधरी चुहाई। अठारै जोजन लांबो
तांतो। सोलै जोजन चवडो। राजा कुरा दो निसा-
णां॥ छत्र फीरै असमांनो॥ हस्ती डाहल फिरै
जांन मैं॥ और निजर नहीं आवै॥ कुरसंदरासरी
सी राजा॥ एक चाट सो आयो॥ मोर निसोल
मंगायलो और कबुतर लावो। पांखीं पंखी
जल हंस। पवन पंखी जोलावो॥ कुंजन
कुंमाजी मंगायलो। ओला लाजो निसा। रोठ
मोछीया मरड काछीयो॥तितर पंखा जोलावो॥
घुडलां घुघर माल घलावो॥ कांनां मैं बोलकी
घालो। करवांरै समभुल घलावो। घोरा सी बंध
पावो। हस्ती यांरै जंजीर जडवो॥ अंबा डाल मै

लावो। पाट पटंबर गंध अटंबर॥ राज पोतो सिरा-
-गारो॥ टररचस॥ ओर ऐकरारा। आटो सीधो मेलावो॥
आटो सीधो घृत मेलोवो। सांढ मरावो लाष साठ॥
मुंगतांने मद पायदो॥ इसी जुगत चढ पोतो॥
कहैं जुरासंध सुंरा सीस पाली। गुप्त कुंते नै पाल्या।
सतरें चार भाजग्यो आगें॥ वीर अठार वो आयो॥
अब सीस पालो वांनज बेठो। मरदन तेल करावों।
भेर दमांमा नोबत वाजै॥ कांमरण मंगल गावै।
चोवा चंदन अगर कुंम कुंमा। वसी वास लिपटावै॥
डोरडो बांधर ब्रांमरा चाल्यो। भावज सुगन मनावै॥
धार दांत चोकै रा जुटा पांन चावतां जावै। काली
पोगवाल पारी निजर न आवै। मुंडा होली बांहरा
काला उजरी कालो मुह पारो॥ मुंडा वचन सुंरावै॥
कालां बलधां वैल जोडाउं। वीहर नें पांचाउं॥
म्हारें होर नही भाभीजी॥ पीहर थारें जावो।
म्हे पीहर कबरा पाला॥ थे कुंजना पुर पाल्या।
थे कुंजना पुर करो साषती॥ म्हे तो सबांहीथारां।

-पदम भरौं भरावें पाय लागुं॥ वैगी जांन परणावो॥ बैनज बाकी लाई आरती। माता लुंण उतारें। भरवें थाल गज मोतीलो। बैनरो नेंग चुकावो॥ दुलो राज भरौं सील पालो॥ भावज वेग बुलावो॥ भावज वेग बुलायलो। काजल नेंक चुकावो॥ कहै सील-पालो॥ सुंणोज भावज॥ काजल म्हारें घालौं॥ काजल घालो भाभीजी मंगल गावो॥ थांरो नेंग चुकावौं। भावज कहै सुणो सील-पालो। काजल कीस विध घालो। थें कुंजनपुर करो साषती। म्हेल बांदी थारो॥ कहै सीलपालो सुणोज भावज: इसा वचन मत भाषो॥ सीव कवरनें परणा पधारो। थांहारें पगां लगावो। भावज कहै सुंणो सील पालो। म्हांनें भार चढावो। व लीषमी हरसी अरधंग्या। पावां सें श्रवेर लगावो: भावज कहै सुंसो सीलपाला। कुंननापुर मत जावो। म्हांसुं छोटी बैन हमारें। उवा परंग घर आवो। हाथी

घोड़ा देस पर गरास: थे मांगो सो देवां। परम मरौं मरावे पाव लागुं। वेगी जांन पठावो: ॥९४॥

केसर जुरी पत्रांरा जे। करनी लोकसरा कार। जांन चढे सीस पालरी। हुई पलांरा पलांरा ॥१। नीकाती सीस पालरी। जाचक मंगै दांन ॥ मोत्यां मोती पारीया। दीया जाचकांनै दांन। काली वलयां गाडी झीली। सांभा स्याल जो आया डाई बोली कोयरी। सुगन्यां सुगन मनावो कहे जरासंध सुंसो ठाकरो। कांई सुगन मनावो। पोहरानीनार पै चढीयाई। कांई सुगन मनावो। कहै पवना लिख सुंसो ठाकुरो॥ डुलै नै आगै करावो। सुगन घाल डाहल पड़ो कोई होसी षेम कुसलाई। क जुरा सुंसो कासबजी मांनो वचन हमारो॥ जाय लपोनी चकरजीरै मसतक॥ रुकै बांरा सिंघ कहै कासबजी सुंसो जरासंध॥ वही तौलै अ गमीन॥ हुं कंग नहीं माहाराज थरासीरो।

एक किरसा तिंवारां ॥ तांबा भरसी धरती धरयां ॥
बरसां तेलसौरी धार हो : सैंहल किरसा म्हारी
परदे राखु । एक किरसा तिंवारां । हालै घोडा
उठर हाथी । उजड गिरसौं न जाओ । राजा
जुरा ऐ तिंनारागवै ॥ छत्र फिरै असमांनो ॥
इंद्र अवाज गिगन में लागी ॥ धीप गयो चांदर
सुरा ॥ चंद्र सुरज तो मो धीपारा ॥ दिन कुं
मिलगी राती ॥ कांप्यो मेंर समंदर सारा ।
कांप्या जमी असमांनां ॥ इन्द्र इंद्रासरा कांपीयो ।
सेंस नाग ते कांप्या ॥ यूं करता कुंजनी पुर
आयी ॥ डेरा दराया जागां । परम मतौ मतावै
पाय लागुं ॥ बधाई जाय कुंरावै ॥१४॥ हरी
हरी डाहली हाथणापुर के ॥ सो सें चल्यो है
कुंजन पुर के ॥ हरख्यो है कुंजनपुर जायरी ।
आगे उभा कुंजडा खडे । बेचे मुली गाजरी ।
बैहडे विगर सहेली मीलगी ॥ फुलां लदां
नारी री खरी हरी हरी डाली हथना पुर के ॥
हाल्यो कुंजरापुर जायरी । पोलीयां जाय

घोड़ा देस पर गरमा: थे मांगो सो देवों। परम
गरौं गरावै पाय लागुं। वैणी जोंन चढावो:।९४॥
केसर कुरी पलांणा जै। करनी लोमसा कार। जोंन
चढै सीत पालरी। हुई पलांण पलांणा।१। नीकाती
सीत पालरी। जालक अंगे धोंन॥ मोंना क मोती
पासीया। दीया जाचकांनै दांन। कालो बलघां
गाडी मीली। सांमा स्याल जो आया डाई बोली
कोचरी। सुंगन्यां सुगन मनावो कहै जरासंध
सुंसांण ठाकरो। कांई सुगन मनावो। पोहरमाळीनारा
पै चढीयाई। कांई सुगन मनावो। कहै पवना
लिघ सूंसांण ठाकुरो॥ डुलै नै आगो आवो। सुगन
पाल डाहल पढो कोई होसी पेम कुलताई। कहै
जुरा सुसांण कासबजी मांनो वचन हमारा॥ नाथ
तपोनी कवरजीरै मसतक॥ एकै वांरणा तिंवारां॥
कहै कासबजी सुंसांण जरासंध॥ बघी तौलै
ग्र गमोंन॥ हुं कम नहीं माहाराज धरती रो।

एक किरसा निंधारां ॥ तांबा भरसी धरती धरपां ॥
बरसां तोलौंरी धार हो : सेंहल किरसा म्हारी
परदे रापुं । एक किरसा निंधारां । हालै घोडा
उठर हाथी । उजड गिरसौं न चालै । राजा
जुरा छै निंनारावै ॥ छत्र फिरै असमांनो ॥
इंद्र अवाज गिगन में लागी ॥ छीप गयी चांदर
सुरा ॥ चंद्र सूरज तो मो छीपा रा ॥ दिन उं
मिलगी राती ॥ कांप्यो मेंर समंदर सारा ।
कांप्या जमी असमांनां ॥ इन्द्र इंद्रासरा कांपीयो ।
सेंस नाग ने कांप्या ॥ युं करता कुंजनी पुर
आयी ॥ डेरा दराया बागां । धरम मतौ भगावै
पाय लागुं ॥ बधाई जाय कुंरावै ॥१४॥ हरी
हरी डाहली हाथनापुर कै ॥ अैसें चल्यो है
कुंजन पुर कै ॥ हरप्यो है कुंजनपुर जायसी ।
आगें उभा कुंजडा लडै । वेचै मुली गाजरी ।
वैहडै चिगर सहेली भीलगी ॥ फुलो लदां
नारी री हरी हरी हरी डाली हथना पुर कै ॥
डाल्यो कुंजनापुर जायसी । पोलीयों जाय

संजो ओरन तेड॥१॥ अरज हमारी केजवा॥
निराधारां आधार। गोती अपंग फकीरगो।
पत राखो हे रांम:॥१। तारन की पत चंद्रमा॥
धरती को पत इंद्र। गगन को पत कांनडो।
भगतां पत गोविंद॥३। जल में बसें कमोदणी।
चंदा बसें अकास। जो जाहुं के मन बसें।
वो वाही के पास॥४॥ वडा वडाई ना करें॥
वडा न बोले बोल। हीरा मुख सेंना कहै।
लाख हमारो मोल।५ सदा सिधारी तोरठी॥
सुंमा पीयारा रांम। पुत्र पीयारो बांझ नै। जुं
लाधा नें रांम:। गंगा न नाई गोमती चडी
नै गढ गिरनार॥ रोठनी तोरठ राभा लीया। लेग
धीजमारा हार॥ ढाल:॥ खिलची बाई राजमरता।
आज दल देषो सीतचालसी। मरत कसारी बात।
भरु जैही तीन बाय के। देह अग्न में जालती॥
बोले राजा मैं देसांजी सराय:। बोलै अब
धोने राजा भीव। सुपनो तो आयो बाई रैहनारो र।
राजा भीव। सुपनो तो आयो बाई रैहनारो र/
देवी म्हांती जादुवरी जांन। जो न तो देवी के
... । उरीयो जोती लियो छे बुलाय॥

पर लुल बोली। डाहली डांगी झार री॥ कजल
टीकी नही कुंकुंरी लिंदली॥ होंडी कुदी सक
संघम कवर पंचोली बुलायो। सब हजुर बु
ऊपवत जो सरदा तिर पाव मंगायो। पंचोल
पहिरायो। कहै कवरजी सुणो पंचोल्यां।
पालै रै आवो॥ आयो राव सीत पालजं
करवोनी आदर भाव लकर वेग जो धाय
डाग साधणा करावो:॥ आयो राव सीत
जी॥ दलनै पांसा दिरावो। आदे सीधो
मेलावो। गोरवो वेग करावो लाल को
माल दीयो गोरवो। धन धन कन्नम कवार।
धन धन जननी तुं जन्मीयो॥ धन तुं नोव
कहायो॥ कहै जुगलिंघ सुणो कवरजी
म्हांरो मांन वधायो। कहै कहै कवर ज
सुणो जगलिंघ: एकअर ज अब म्हांर
सो सो पाव धरसा धरती पर। तो म्हांरै मात
धारसा:॥ राग सारंग॥ सीता पत रुघ

जावोरे हरीया द्वारका। यारी तो सकल बुध
सीध। राजा म्हे तो ईठेई वीहायलां। बाई सब
दीयो छो सराप। जाजोरे हरीया घर आयरो।
नंद जोशी लीयो छो बुलाय। जावोरे ब्रांम्हणा द्वारका।
ब्रांम्हणा द्वारका लग जाय॥ दुर धरसो दूर
द्वारका संदेसो ले जाय॥ रुषमणा लिखे संदेसा॥
बैठ ब्रछरी छांह। धरती रो कागद करु॥
लेषण सब वनराय। सात समंदरी मस करु।
तोवी हा गुंण लिख्या न जाय। प्रभु गुंण लिख्या
न जाय॥ ब्राम्हण द्वारका ने जाय। पदम कहे
सब कृष्णा जी॥ अहो मोरी सिर जाण हार॥
ब्राम्हण द्वारका नें धाय॥ कुंजनपुर में
होत ईचरज। स्याल रो जी गाय। स्यालीयो
सिसपाल डाहल। सिंघ तणो भष षाय॥
ब्राम्हण द्वारका ने जाय॥ जीन लोज
सिसपाल आयो। जरासिंध उणो साथ॥
दल रोंसा वां धोसे घुरे॥ प्रभु इंद्र आयो
गाजे। पवन री जुं आज प्रभु मंडे।

बादल जीमें विल लाय। गरड चढ कर आवगोविंद।
भगत पदम वल जाय॥१९॥ क्या मे पापरा
पाप कमाया। जालें चर लिंस पाला आया
क्या में जांमती कंन्या रोली॥ क्या मैं पिंजै
बाल संताया॥ क्या में रासुं नराद संताई॥
क्या मैं जीमता विप्र उठाया। क्या मे चालतो
रिष संताया रुषमण पाप कमाया। जाते
बालिस पाली आया॥ क्या मैं पगलें पग
मिल धोया॥ क्या मैं तिरथ जाती रोक्या। पापा
पाप कमाया। म्हारें इसा मन आडा आया। क्या
में क्याजु दांम दांम चलाया॥ क्या मैं चालता
गांव उजाला। क्या मैं वन मैं दुंब लगाई॥
क्या मैं वधाती कुंपल काटी॥ क्या मैं बीवती
गउ दराई। अब जल पद मईवें गाया॥ म्हे तो
जन्म जन्म सुख पाया॥२०॥ द्विज कहियो
हा नें समझाय॥ काहे को देवी अंबका पुजी॥
काहे को पुंज्यो सिव चित लाय॥ द्विज कहियो हानें
समझाय काहे कुं विप्रां नें भोजन देती। धरम

नैं मकर पुजा पाव। द्विज कहियो हानैं समझाय॥ काहे को व्रत नेम करती। काहे को सीतल जल न्हाहे॥ इंतरो भाग काग नीयो जाके। पदम के स्वामी अब रैण बीती। पांणतज्यां पछै कोई करोला सहाय। द्विज पाती दो मेरै स्यांमनैं॥ लेजा पाती जावो द्वारका। मत दीजो सीसपालनैं। द्विज पाती दो मेरै स्यांम नैं॥ अो सीसपालो चन्देरी रो राजा॥ व्याहण आयो लेसी मांगनैं। द्विज पाती दो मेरै स्यांम नैं॥ कुंजन पुर में कवी रुकमणी। जपे तुमारो नांम नैं। पदम भाँ नागै पाय लागुं। रथ बैठा वो मांगनैं॥ द्विज पाती दो मेरै स्यांमनैं॥२०॥ हरजी बिना नीज नहीं खाउं। मुंख न बोलुं बांणी॥ हरजी बीना सीस न गुथाउं॥ काजलीयो न घेपुं॥ हरजी बीना डाग नैं चौहटलुं॥ अौर लिंगार न पैहरुं॥ हर इब लेवो आवै नहीं तो। रेही अपण मैं जालुं।

आंगलीयांरो मुंदडो ॥ कुंन कुल आवै म्हांवांहि।
पदम मोंगो मगावै पाय लागुं॥ दीजो कृष्ण नैं
जाय ॥ २१। मायी वैठी सैहत पो॥ रही लंब
लपटाय॥ उडगारा सांरी पडारे ब्राह्मण॥लालच
बुरी बलाय: सुडांरिष ब्राह्मण। जोशीजी थे
जुठ पडोलामत जावोरे॥ माथी धर्णी सिंहपालरें॥
याहा आवै तोलो चोरे। आयांरे लोभ तो मत
जावौं पांडे। भैव क्रण लालचीवैं॥ कौस
सात सें पुंरी द्वारका। मास तीसं जावोरे।
सुडांरिष ब्राह्मण जोशी काय डोला। सुपनै में
हा दासरा कीनो। हुं थारो पण राखुरे॥ कोस
पांच लोत जाय। खुंउ हुंतो न रुषमणरो लासुंरु॥
२२॥ हरषै नयन चलो नंद जोशी॥ ब्राह्मण
सुंगन मनावै। चंचल पावउ उठावे। गाडा
नदीया नाजरा मिलीया॥ होयें चोलें माली॥
कुंभ कलीस थों कामरा मीलगी ब्राह्मण
सुगन मनावें। घोडी नदीया मिल्या कनी जी

रथां बैठी जाई इसै महुर्त ब्राम्हण चाल्यो : मिलती
आज मुरारी हरी डाली म्हनै हरीसो मिलीयो
और रावली वाती आजाए सलीमरुडामहांनै
सांजरण हुई थी मिलती अरकारो थारी भोजन
पांच रात जायर सूतो तोलै में माफो
दीनो थारी ब्राम्हण सांच कहै थी ब्राम्हण
कुडो हुवो श्री कृष्णजीरी गादी ऊपर रुक्मणजी
मतो ऊठायो कुंजनाथ रो ब्राम्हण आयो
ऊठ दई है आवै कहै कृष्णजी सुणो रुकमणी
थां भो कुंकी जोणपै भाली विरारणो घर में
मेलो अब क्युं दुपरो लाग्यो कहै रुकमणी
सुणो कृष्णजी थे हो अंतरजामी थां
ब्राम्हण तो बुढो ब्राम्हण नहीं छै यहै मैं
बांकी जद ही कृष्ण हा पारगत भेज्यो ब्राम्हण
नै ले आवो : गैहरी निद्रा जोती सुंतो। वहैनै
मती जगावो। जद पारगतां ब्राम्हण ऊठायो
पदम भरो भगावे पाय लागुं पुरी द्वारका

लायी २३ सुंतौ गरज नहीं सागरसी नंदजी
ईणरो आयो आंरत जाग डुर पतायो नेडो काडुं
आयो: कुरण देश कुण नगरी डेलीको ॥ कहयो
कोंण विचारा ॥ कुंण राजोंरो राज भणीजें ॥
कहयो कोंण विचारी ॥ आरत नागर पारस
गोमती । जादु जगत जरोण ॥ छपन कोडरी
आतर कराई । पई जादू पत राजी ॥ ईणरो ज
सेक देषलो पांडे । जीत में हा मेल स्वोयो ॥
हीरा लाल आंगरास झलके । सांम सुमेर
लगायो ॥ कुमै बालक कुंण हो बांमण ॥
कोरण देश सा आयो ॥ कुंण राजारा कारज
लायो ॥ कहयो कोंण विचारा । रमोरे बालक
पेलोरे बालक ॥ पांसुं म्हांरो ईतरो कांम ॥
कुंजनी पुर सुं चालीयो ॥ म्हे सारामती लीनी
छे जाय । बांमण पुछे सुंसो बालको ।
म्हांनें श्री किसन बताय । ऊंचो म्हैल लवशकारा
धोडा ॥ जहें देल कंला छोजा । सूरज सांभी

पोता कूंवारी ॥ दो पोतड्या पड छाया ॥ ब्राह्मण
पुरी में पधारीयो। वे हैरा पाप वितै हुय
जाय। मिनख बुध तोडी जा रही ॥ आई पै देवता-
वांरी बुध। गढ मढ पोल चकोस हुया है। भीतर
भेद सुणायो ॥ कूंसा तांणै कर कागद दीना।
विप्र कठासुं आयो। हरख्यो ब्राह्मण राजा भीवरोहो
कुंजानीपुर सौं आयो। राजा भीवरा कारज
सरसी ॥ तो य पूजन राज चलायो। काढ मूंडो
दीयो कूसाने ॥ लीजो आप पिछांणण। थांसुं
पढतो राव डाहली। उठ राजा चढ आयो।
कोड निंनांणवे दल लायो ॥ आसांग हुवै
तो चालजो। कह सुणावो बात ॥ घडी
दोय म्हांने आवतां लागै। घडी दोय में
म्हे जावां ॥ कहै कूंसाजी सुंणो हो ब्राह्मण:
थारा पराक्रम भारी। म्हांरे भायां नै म्हे
पुछलां कह सुणावो थांरी जात ॥ दादी
सोलषरी मागै लोवटी। राजा प्रसन्न

पुंवार। राजा भीवरी ध्यार जात है। जीतुं
कहुं क गिवार। सोले हजार आठ म्हांरै
बांराणां कहीयें॥ थांरी कंवरी रो रूप बतायं॥
कुंजता पुरी बल मद की राजा भीव नरेस।
लाख चोरासी लाख गांव है। सोहम चचांरावै देस॥
चनाण चोक जड्यो गज मोत्यां॥ हीरा जडीया छाजा
लाख चोरासी गढां पर नोबत वाजै॥ इतो कुंजन
पुर राजा साठ लाख कोठी बाल चांराम॥
वाजी अनंत न पार। आठी लाखमें मंता
हाथी। ऐरावतरा साथी॥ राजा भीवजीरै
पांच पुत्र हैं। छठी रुकमण बाई। इतर
घरां चार बती सो है॥ कृष्ण घरा की बाई।
क्या क्या शोभा कहुं नगरी। शोभा
कही न जाई॥ दाड़म दाख अनार आंबली।
केलजे नारेल सुंपारी। चम्पा मरौ मरावै
चाय लागु सब मत लावो वार॥२४॥
पनरा चोकी रिष ने टाल दो।

मरदन तेल कराय। रिष आयो घडीयो दूसरो॥
बटैर हरजी धोवैं छै पाव। पांको वेग दरायदो।
सोवरन कलीस भराय। हरीय मुंग मंडो हारा।
उज्जल चावल लाय॥ कनक कटोरो रिषजीनैं
घी धरयो॥ बरियां मेंदा आंत॥ ब्राह्मण जीमैं
राजा भीवरो। और जलेबी लावो। मोती चूर
मगदारा लाडु॥ मोयण सरस दिरावो। सक्कर पार
रिषनैं षांडरा: तुंबती घांरसा लावो॥ ब्राह्मण
जीमैं राजा भीवरो। और अथांणा लावो।
आंब आंवली आं घांरसां। रसरानी बु लावो॥
ब्राह्मण जीमैं राजा भीवरो। नरको साग
मंगावो। चीका केला और मतीरा। मुलीयां
भुंरा लगावो: सरस षांडरो मंगावो गुरबो॥
आचार आंवलारो लावो॥ ब्राह्मण जीमैं
राजा भीमरो। थोरैं नाय कसी कहे जी॥

अनदाता म्हे धारया : पदम मोती माणे पाय लागुं ॥ दबरा

और दिरावो ॥ बालम जीमै राजा भीमरोई । जागुपत

री पोल ॥ तारामती री कांमणि ॥ गावै दो रंगरी गाल

सोजनीया । सोजन आया है जिन मैरै अंगरा ॥ इहानें

दो लैलरा है उपल मुसलीया ॥ इहांने दो जीमरा है ।

मीठरस भोजनीया । साजन आया है सभी जिन मैरै

अंगरा ॥ दोस पदम बल जाय । गावै तेराहर मुसी

गुरतीया ॥ सुरा समधर चतर सुजांरा ॥ आये

हम तेरै अंगरा ॥ अब तुम त्याग भागरी धुरी ॥

कुल मे लेरी नाम अमर हुय जाय ॥ धुसी होय

बोलै चंमरा । साजन आया है सभी ॥ जिन मेरै

अंगरा । मे राजी भीवरो बांमरा । तु मेरी जजमांन ।

धुसी हुय देषरा सुरा समधरा चतर सुजांरा ।

आरु हम तेरै अंगरा । हीरा लाल अमोलक दीना ।

दास पदम नल जाय ॥ धुसी हुय लै दषरा ।

सुरा समधरा चतर सुजांरा ॥ आये हम तेरै

द्वारामतीरा दल आया॥२६॥ अब कृष्ण हर
वांने बैठा मरदन तेल करावे॥ मैर धमांमा
नोबत बाजे। कांमण मंगल गावे। चोवाचनण।
अगर कुंम कुंमा। धरीण वास लिपरावे॥ थांरे
तो कारण हांराय जादोवना वाग लगावां। उभी
उभी मोती रावरां राज॥ जब राय जादोवना उवर रा
मिल नाय। डुंगर में मुसकाय कांमरणी तेरो पार
न पायो। थारे कालांसुं धोला भया आया गरडा-
पाल हो। अकल गमाई दिनी नाथ बाबा कुठड़ो वर
सिंग हो। मोर मुकट कर काढनी। और वजंती
माला हो। मुरली धर वजाय माधो। बांरे वरस
कै महाराज हो। पदम भगत की वीनती॥ अब
घोड़ी वेग मंगायलो। २७॥ कहे हलधर अब सुंणो
कृष्ण जी। सुंणीयो जादुराय॥ घोडा डाहला ले
चढीयो॥ बलध चेई मंगाय। मंम पेसरा खरा सुं र

जंगराा।२५। हलधर ब्रमा नें बुलायलो। करो
विस्तार। जद ब्रमा चड़ी उपाई। सतर दिनांरी
बुहार करो बुहार करो॥ ब्रामरा बेठ देबो॥
सिध श्री सर उपमा। राज श्री गुरासाय। ज्ञा
जीदवां। नेंरा लिखें छें शुभ उपार। चीरी
भेज दो। करो हली हल जांन॥ कहै हलध
सुराो कृष्ण जी॥ कुंरा सी भुप बुलावो। या
जुंट नव षंड विचोलें। लेय चढो सीस पाले
कहै कृष्णाजी सुराो बलभद्र॥ एक अरज
म्हांरी। न्यारा न्यारा कहै सोध लाही॥ एके
सिंघारां। तेतीस कोड देवता कहीयें॥ वांनें नो
बुलावें: छपन क्रोड जादु मिल चढसां। बोहत
वराायां जांनो नव नाथां चोरासी सिधां। नेंम
नीप दल कोका। पांच षोहरा सुं पांडु चढली।
हथरा पुरा राजा॥ बांवन भैरूं चोसट जोगर
वीना बुलाया आया। पदम भ्यों आया...

खरबरी पछयांरा॥ बागड देसरा धुंम्या बैल्या।
डांग तणा सिंगेल्या॥ उत्र देस अर पछम देसरा।
सबही बलध मंगावो। बलधांरा सिंग मढावो
सोने सुं रपां सांतरी करावो। घुंडला घुघर माल
घलावो। कांनां में बोली घालों। करबांरे समभुल
घलीवो। चोरासी बंधवीवो। हस्तीयांरे जंजीर
जडावो॥ अंबा डाल मेलावो। पाट पटंबर मेघ
अडंबर। राज पोल सिणगारो:। दरर चरू और
टोकरा॥ आटो सीधा में लावो। आटो सीधो
घृत मेलावो। सांढ भरावो अली लाख। मंगली
नैं मद पाय दो। ईसी जुगल चढ चालो।
पदम भोग भागवै पाय लागुं। दोड बेग
मंगावो:। ३८। वैग मंगावो सांडरांपा॥ तुरत
चढी असवार। तुरीयां तुल मलार करे। लीया
गाजता गजराज। इंद्र घरां सुं घोडी उतरी।

रूप बखांराुं क जीत। धरती पाव धरै नही
तेजरा। करे पवन सुं बात॥ कुंरा घोडी
रो मोल चुकावै॥ कुंरा धरचै श्री दाम।
कुंरा घोड़ी रो रायक पायक॥ कुंरा चडती
असवार: नंद घोडीरो मोल चुकावे। वसुदेव
धरचै दांम। हलधर घोडीरो रायक पायक।
श्री कृष्ण असवार॥ लाल लगांम जड़ीयो
कडीया लोह। केस केस मोती साख्या। कानां
नैं जंजीर जडावो॥ ईणी जुगत चढचालो।
सिंधी आवे मालरी आसे डोरी चाहराज।
सेहरैरी चाह आगे। हलधर वीर सेहरैरी मोज
चाहुं राज। सेहरैरै हीरा लागा। पना लागा
लाखराज। मोती हन लुंब लगायो॥ लगाया
लाखराज। मोती हन लुंब लगायो॥ लगाया
हलधर वीर हो। सेहरैरी मोज पाऊ। पड
गरथा दोय च्यार लेऊं। गांव लै लख वीसराज
तैं लुंगो कलगां वड ही जादीयो। सेहरै

मोज पाऊं राज। कहा करु मैं परगनारी॥
कहा करुं गा कलगांव राज। हीरें तुमानारी।
सदा चौराज चलाय राज। सेहरेरी मोज पाव
केसरी राज। दास पदम कृपा करी। म्है गावां
मंगलाचार राज। सेहरेरी मोज वगसी राज॥
केसरीया वागो वाग्यो। माथैं मजलत मोड॥
वींद वरायो वसुदेवरो। दुल्हो नंद किशोर॥
फुलां माल ल्यावीयो। फुल माल पहिराव॥
निकासी केसा लगी। गावे वनडो वराय॥
त्रिभवन वनडा पर मे वारी हो। वागो तो
सोहे थांने केसरीयो वना। दुल ल्यात्री सरा
छीब भारी हो। हीरां जडत सिर सेहरो विराजे॥
सुंरज किरणा सवाई हो। त्रिभवन वनडा पर में
वारी हो। फूल माला ले मालण ल्याई।
दीनो द्रव्य अपार राज। चंपो मरवो
केवडो राज। सिंचन हर बेरी वारी हो।

त्रिभवन वनडा पर में वारी हो। हाथी घोडा फोज हल धरती। जोन जुगल कर सारी। सोवन साज वराया सब जादु॥ रूप वराया ग्रस वारी हो। त्रि भवन वनडा पर में वारी हो॥ ब्रमा इंद्र जनेती आया। भगत परम बल हारी हो॥ त्रि भवन वनडा पर में वारी हो। बेन सुभद्रा लाई आरतो। देवकी लुंरा उतारे। भस्यों थाल गज मांत्यांरो। वेंन रो नेंग चुकावे॥ दारा- मतीरी ग्रोर कांमरयां। एक एक सो प्यारी॥ श्री कृष्ण जीरे काजल सारे। हलधर जी रीनारी॥ काजल थाल भई मुल कांसी। हमारो नेग चुकावो। नव लख नारी छीब पर वारी हो। हाथी घोडा। देस परगणा। थे मांगो सो देवां। २८। छपन क्रोड जादु मिल चलीआ:॥ हलधरजी अगवांणी। तेतीस क्रोड देवता चलीया॥ महादेव अगवांणी॥ पांच बोहरा सुं पांडु चलीया॥ भीव कवर अगवांणी॥ बोवन

भैरुं चोसठ जोगणी ॥ बिना बुलायी आ वी।
परम भोले भरतारे पाय लागुं। मेरा पिराची
हर चाणां। पिना पिना कंचन कोड कोई
मत पतीजो कुडा सांभणां। सांमणा में
तो नहीं सच्यों दोस ॥ हर धारणा सुं डरती
रो है नांच्यो बाई सोलै हीयो सिंणगार ॥
थ्यांसुं तो गरै कलीयर मोर जुरु। सोनैं में
मढाउं थारो पिंजरो रे सुवा। पांखडल्यार
लन जराउंरे। चुन चुगावु सचा मोतीयां रे
सुवा ॥ मिदर मांहि रमाउंरे नरहर वनरा सुवारे।
जावो रे सोरठ रे सुंगणा देसरे। राती डांडीरो
थारो पींजरो रे सुवा। ज्यं चलै होलुं नाउरे ॥
हम तुम इतरो आंतरो रे सुवा: हःम चावलुं म द्दाल
नर हर वनरा सवारे: संदेसो म्हारो सावलीयनै
दीजोरे। पांखडलांउतालो उतावलो ॥ चे बाहर
जोरे सुवा ॥ वाटां में बिलंब न कीजोरे।

सखी सोनेरी वरी द्वारका। सुंर नर मुनी जनरी मोर।
हरी थे वनरा। सुवारे संदेसा म्हांरो सांवलीयें नें
दीजोरे। रांम रूपने ब्याणे परणा। सुर नर
पिंलग पहेरा। पदम भोंरा भागवे पाय लागुं॥ सुंवा
जब नेरां भर भर दीठरे॥ ३०। नर हर वनरा सुवारे
संदेसो म्हांरो सांवलीयनें दीजोरे। सुवो उडे
श्री रूपमणलरो॥ गलै पत्र का बांध्या। हरीयो
सुंवो अब को कीयो। बैठ अंबारी डाल॥
श्री कृष्ण सुंवाने देखियो॥ लीयो हजुर बुलाय।
खोल पत्रका हर वाचीयो सुं बोलीयो हलदेरे
लगाय॥ हलधर वंधुनें बुलाईयो:। चढोन
लीवो वार॥ निकोरसी केसो तराी। जीचक मांगे
दोन।१॥ हर वडे हर ना वडे। कुंगनां वडे
क लोम॥ अरजनरे पनें हाकदो। भली करो श्री
रांम॥ २॥ जांन श्री कृष्णरी संब हरदलो है।
गरायत लो है नाही॥ कहे हलधर अब

सुणो कृष्णजी॥ अरज्या दोतो लावां॥ कहै
कृष्णजी सुणो बलभद्र॥ एक अरज अब
म्हांरी॥ वडा चार देव करईयां नें भेजो॥
युं कर सीख दरावो॥ छपन क्रोड जादु मिल
चलीया॥ केई चलीया केई दोला। घरांनैं
पधारो म्हांरा घर वा गणपत। पोल तरणा
रख वाला॥ अग्यां मांगर चलो गया सो।
मुलो वांहरा चली या। कहै गया सों सुणोर
मुंसां॥ कल्योज कीजो म्हांरो। गरड रथ नें
जाय पोह कर हतो। धरती पोलर गेरो। मुंसों
जमी पोल कर गेरी। मुषलैं कयुं न भाख्यो॥
अरजन रथ बोहतेरो हांक्यो॥ रथ जिथ
रो तिथ राख्यो॥ तुटै धुरी पडै पाचरथ रथ
भडाभड भाग्यी। ऊंचर घोडा पाव धरै नहीं
धुंमें रसावल डाग्यी॥ तुटै जुडा और जुंवाडा।
लोहै जडीया गाडा॥ ऊलरा आंरा वाग में

उतरया। गणपत कीया मनावा। चालन चाल
गवरी रा नंदन ॥ तो वीन श्री कृषण कवारा।
चाल चाल म्हांरा गिरजा गणपत। तो वीन
कृषण कवारा। मोटी पींडी पग पंगला सा॥
मस्तक मोटो कानों। म्हे नही चालो म्हांने
हलधर वरजै॥ लाजै हरसी जांनो। दुंद दुधाला
सुंड सुं डालो॥ बो हो भोजन जल आहारी।
म्हे नही चालां म्हांनै हलधर बरजे॥ लाजै
भीव कुंवारी। सो आली मण लावो चावल॥
इतरै री हुं करुं कलेवो। जीमण फेर बुलावो।
पैहली पुजा म्हांरी पुजे नही तो चवरी में
वीघन करावां। एक हाथ श्री कृषण
पकडीयो। दुजो हलधर भाई। पकड़ हाथ
रथ में बेठायो। जींन कुंजनां पुर आई। चोरासी
लो वरायो पोतरा। लग्या बाजार सहोलेरा। अठारे
जोजन पृथी। सुं ज्यो जादुंवर रा डेरा। परम
भरी भतावे पाय लागुं॥ ब्राहमण जाय दो वेरा॥

३१।सूरज किरण संभालतां॥ अरगदे छे राज
कवारा। दे छे सूरज जीनें बाई ओलमा॥ म्हांनें
श्री कृष्ण मिलावोजी आज।उठो उठो राज सहेलड़ां।
म्हांरे मनड़े में हुंयो छे उछाह:। दांत वलीसों
म्हांरा कुल कीयो॥ आंब फरु वे आज॥
आंब फरु वे म्हांरे कर कुरै। म्हांरे आंगण
बोले छे कागा या हांर नारां म्हांने हर मिलै।
मिलसी द्वारका रा राव॥ ब्राह्मण देषो बाई
आवतो॥ वेरा रुषमण रजे पाव। कोनी
ब्राह्मण हरी वातां॥ कद मिलसी जादुराय।
उंची उंची पलकां जो बाई रुकमणा हर
डेरा अचर लगाया है। सहेलां है हीयो
हुलसे म्हांरो मन हसे। म्हे तो मिलसांहे।
मिलसां जादुराय॥ सहेलो है हियो हुलसै
म्हांरो मन हसे॥ जांन साज जादु नाथ
पधारे॥ हलधर जी के वीर। सहेल्यां
है हे०।राजा भीव पंचोली बुला या॥

सब हजुर बुलाया॥ अवल जरे सर[illegible]रासिर पाच मंगाया। पंचोल्यां पोहराया। कहै भीव सुंरा पंचोल्यां दल देवीरे जावे॥ वहै डाहल में पाछो मेलो। रुपमाण वृक्षा विहावो॥ कहै पंचोली सुंरा रावजी॥ उलसे विण विध जासी। जुरासंघ सारीखा राजा आव धरे छका ले लो। कहै भीवजी सुरा पंचोलां थांरो अंदाज वावो। थांरो कह्यो डाहल नहीं मांनें ओ।को डाहलरो आयो। कहै रुपमईयो। सुरा मोती माला। एक अरज अब म्हांरी। आयो कहीयै छे गवालीया॥ बीचन होसी कोई भारी। कहै जरासंघ सुंरा सीसपाला। हुई बेम जुसलाई। मंत्री आयो राजा भीवरा। करावोनी आंदर भाव॥ कहै पंचोली सुंरा। सीसपाला थांने कोई समझो॥ भारथ जोड कुष्ण हर आयो। थांकुं

रा वडो बुझयौ । कहै सीत पालो । सुं रा
पंचोल्यां नहीं मांगुं छोनो । सतरै वार भाजयो
आगे वार अठारवां आयो ॥ करले वातने
पुंख पेचीदउ चन्देरी में दांसो दलाउं ॥
कहै पंचोली । सुंण सीत पाला ॥ अब कै
मोसर नांही ॥ अब के मोसर आवो नीवला
केसू राव कहावो ॥ कुंभ करण तो राव
जुरासंध । रावण सो सिस पालो । रामचं
सो काजुमो ॥ अब नहीं देसो टालो ।
विध विध कर पंचोली समझावे ॥ डाहल
एक नहीं मांनै ॥ पदम भरी भरावै पाय
लागुं । मंत्री ७० चा आवै । ३३ ॥ सीत
पालै पुली बुलाय कै ॥ आली कीदी निम
वेठाय हो रावजी ॥ कहै सीत पालो वात
पुलकं कहीज कीजो म्हांरी ॥ सीत कनर
[illegible]जी कर आलो । मोस धनेरी [illegible]

मोज घरोरी देउं कहै आ दुती सुंरगा रावजी।
देष हमारो कीयो हो रावजी॥ देष हमारो कीयो।
भीव कवर राजी कर ज्याउं॥ तो भल म्हांरो
जीयो हो रावजी। रुषम कवा राजी कर
ज्याउं॥ तो मोज घरोरी पाउं। पांरी मे
आग लगाउं। सुके धोरैं में नदी बुहाउं॥
तो में दुती नांव कवाउं। भलांजी में येरी
नांव कवीजुं। जमी असमान मिलाउं॥
इंदर री अपछरा लाउं॥ तो मैं रुषमणा कांई
ललचाउं॥ रेजी पांच कोडरो येरी पहिरयौ।
सात कोडरो लीनो। रमजम करती दुती चाली।
जाय रावले बैठी। सषीयन संग बाई रुषमणा
बैठी॥ दुती जाय बतलाई। गेहरांमें हीर मेला
पांव लागी। भीव कवा बतलाई॥ कहै
आफुली सुंरगा बाई रुषमां॥ एक अरज
अब म्हांरी॥ गहरां पहिरो बाई राजभोगवो
... ॥ भाई भला भलां नें लाया

पांनैं होली लाते ॥ आँ गहराा आँ रं रै वालो ॥

॥ और कवर परखांवां ॥ अवर कवर में है केते

परगां ॥ तासी कवर न कोइ निर तैं रूप रीझौं

नहीं राजा ॥ उवो आवो तोलोवा ॥ ला तिरसी

ठुकराई म्हारे ॥ मो तिरसी छै पेरी । राजीरो

तो उछाव उछाह करावां । चंपेरी लेजावां ।

डोली मैं बैठाय राई ॥ आगै व्याह करावां ।

जद बाई रूपमण गुलचारी मारी यार पलेरा

पाय ॥ यार दांत चोकेरा टुंरा । पांन

चोवती चाली । गेरां मार काय मैं लीनो ।

उजड उजड आगो । पाको चीर चीरकुली

जो वै । जीव मांही मैं लोनी । तंबु पाले इती

वैली । सिरपालो वतलावै । सुंरा है इती

के लीस पालो । केती कवर ललचाई ।

चार दांत चोकैरा टुंरा । मुडो मरो बो करयाई ।

मिनख डुवे तो मान जावे। केरन मानें कांई॥
कुंजना पुर नैं लुंट लेवे॥ बाई नें केवीलो
पदम मोटो भावे पाय लागुं। पांडां वाळ
दिरावो :। 34 राग आसावरी॥ जीव तेन घरनारी।
आवो म्हांरी लखमण वर दिखलाउं। आवो
म्हांरी राज कवारी। दीसे रैणा भवन मिलकंता।
वडे वडे जोध्या आये नगर में। जांन
घणी आत भारी। कोड जो सुरज उगा नगर
में॥ विलखी राज कवारी। दीसै रैणा भवन
मिलकंता। डाहरी वैरो मुख नही देखुं।
डाहरीयो म्हारो भाई सोई वरतो लखमईयो
लायो। मरजो लखमइया भाई:। दिसै रैणा
भवन मिलकंता। गोखे वेठी पल जो
वतलाई॥ बीवजीरी राज कवारी। चहुं दिस
... आंख्यां डांराले नैंणा मोला

रोवे। दिसे रैंणा भवन ~~झिलकंता~~ झिलकंता।
बोलै भीवजीरी कवरी। बोलै सुवला बाई।
दिसे रैंणा भवन झीलकंता। मातापितावर
दिनो सोई। बाई कुं नही मांनै तीन भवन
नव खंभ विचोलै। डाइरीयो नहीं छांनो।
दीसै रैंणा भवन झिलकंता। रो रो माता
पाप न बोलो। ईणी वचन मत
भाखो। डाइरीयो म्हांरे पगरी मोजड़ी
पर मांहांरो सारंग जांणी॥ दिसे
रैणा भवन झिलकंता। हाथ जोड़
बंधु रुपमईयो। करै बीनती अपार। म्हांरी
पत थे राखैजो। म्हे छां थारा वीर।
सोंहणा बांहणा हली देसां। भली भांत
मुकलावां॥ कहै रुपमईयो सांभ बाई

रूपमाता। एक अरज अब म्हांरी। एके
उदर में लोटीया। जुं दोनुं भाई॥ वालप्पा
कन्यो॥ कोध नहीं नांषे। मोनज रूपमाता
बाई। डाइल तिरतो राज भराजे। तो
सारी तो भाई। तील पालेने चढाय लायो॥
बुरी करी म्हांरा भाई। सषी बेठी सहत पर
रही चांष लपटाय। उडतारा सोता
पडारे बंधु। लालच बुरी बलाय॥ बंधु
म्हां सुं बुरी करी॥ कागा किनका
धन हरे रे वीरा॥ कोयल किनको देय।
जीभ डला इंमरत बतेरे वीरा। जुग अपरो
कर लेय। बंधु म्हां सुं बुरी करी॥ लायो
तील पाल चडायरे। पुरष रो पुष बंबई
रे वीरा। बोलत बचन अभंग। तो की
... वीरा। जेहान व्याये

अंग। थून्यु म्होंसुं बुरी करी ॥ मुरधरो मुख
चीलाणीरे बंधु। गुंगा जुं मेदो जाय।। अोंगरा
अोंगरा चांचलीरं वीरा॥ पुरो मांईहन समोइ
समोहि X बंधु मां०॥ अे कारां पढे स्वाद
दोरे वीरा। चोन सुधारे कप अे कारां पढे
नर लैरे वीरा। पचं मोलीर मन राजा भीव
पंचोली बुलाया। सब हजुर बुलाया।
अबल जरे सरस सिर पाव मंगाया।
पंचोली पीहराया॥ कहे भीवजी सुणो
पंचोल्यों॥ दल देवारे जावो॥ दल देवारे
जाय कर॥ खबर कृष्णरी लावो॥ मंत्री
चाल्या राजा भीवरा॥ दल देवांरे पास मंत्री
उभा राजा भीवरा। बडा करे विचार॥ उंचा
डेरा श्री कृष्णरा। धरसरा किन विध होय॥
कहे हलधर सब सुणो कृष्णजी। कक

अरज अब म्हांरी॥ मंत्री उभा राजा भीवरा॥
करोनी आदर भाव। जद ही कृष्ण हर पारगत भेज्या॥
पंचोली लें आवो। जद पंचोल्यां नें पार चतां उठाया॥
राय विमांरा बेठा चोरा य विमांरा बेठाय कर।
दल देवांरे उतारया जद पंचोली पावां लागा॥
पाप गया जम तांई॥ मिनष बुध तोडी ना रही॥
आई देवतावांरी बुध॥ चीठी वाच लई हलधरजी॥
बोहत लीची मनवारां॥ उलटी वेग लिखो राजाने
जदु चाकर थांरा॥ कहे पंचोली सुणो कृष्ण जी॥
दरसण किण विध होसी। पदम कहे देवी रे
देवल॥ दरसण मांहांरो होसी। रुषमणजीरे
वदन पर। बिंदली सोभा देत। जांणु चंपेली केतकी
भवर वासना लेत॥१॥ रुषमण जी के वदन पर लटीयां
छिटक रही। मांनु कंचन बंभजु। नांगण लपट रहि।
धन बिना किसी धनासरी। पांव बीना किसो सिंणगार॥
... बिन किसो ... किसो ... बिन किसी मल्हार।

रुखमणी पुजे अंबका॥ मा मोत्यांरे थाल। मथरा
पाउं सासरो हे देवी॥ वर पाउं गोपाल॥
कवी अंबका जासी॥ बाई रुखमणी अंबका जासी॥
बो हो सखियन के संग सिरोजे। मांजु हे क इंद
घरासी। कुंजर जासी इर च्वी बांधे। कोर मवन
झुकासी॥ कवी अंबका जासी॥ बाई रुखमणी
अंबका जासी॥ कहै रुखमणी सुणो मोरी माला॥
बाई मेर कहां ले जासी॥ बड़ां घरांरी रुखमणी
बाई॥ दूज घरां जासी॥ कवी अंबका जासी।
बाई रुखमणी अंबका जासी॥ कहै जात संघ सुण
सील पाला॥ थे पोकल हु जासी॥ कालीयो
गवाल कपट ले आयलो॥ कुंल नें काट
लगासी॥ कवी अंबका जासी॥ बाई रुखमणी
अंबका जासी॥ निवरा करां हे देवी अंबका॥
थांरे मुड लुण लागां जी बाय। मुलां नें भजवो
कों। म्हांनें कृष्ण मिलावोनी आज काहे कों

पाव पडत है म्हारै हम तमे कहा दुराती है

दये तो आपण दोनी॥ थारो रूप भवांनी॥

एक समै तुं जन का होती। जनक कथा कहीनी।

तेंरह सहस्र माल जो लागा। धनुषने। तैं करलीयैर

उंतनी। उबल तो बाई अब थे करांनी। अबा दोणा

सबै सिंगारां। बालक नागजी थे वडा। धरतीरा

झेलन हार। सैंहस फणांरा राजवी॥ फण फण

दोय दोय चार भाग फण दोय दोय चीर भणीजै।

थे वडा राज कहावो॥ म्हांरी बार जठै बासकजी।

सीस धालै नै धावो। पदम भलो भागवे चाय

लागु॥ वेगा कृष्ण मीलावो। नी आज रजी रजी

रथ उतस्यौ श्री कृष्ण जीरो। पडी है बंबा रोल हां॥

दोरण बासब रहा पच पच॥ कृष्ण कवरी ले गयो।

रजी रजी ताली देदे हसै सजनी॥ अंबकारी

माल हो। मुंड कुटै धरण छुटै कुंण वीठी

अकाज हो॥ रजी रजी लीय जेहरी गगन

गरजै ॥ अंब कारी प्रोल हों ॥ दांरा वांरासी
जुटे। सीत पालो उंट्टे हारीयां। रजी रजी अलती
रुपमणा जाब बोलै। सुंरा सखीं इक वात हो।
मेरी मात से जाय युं भणी। रजी रजी आके
पें कृष्ण दवारका वासी ॥ बांह पकर हां
ले गया। परम भौं भणावे पाय लागुं।
म्हांनें जन्म जन्म साहब मीलसी। रजी
रजी मात मीले अब बात कीनी। रुदन
कीयो छे अपार हां। सखियां सारी
पेषी आवली। रुपमणा दीसै नांय हां रजी रजी
मेरी चंद वदन चुडा भणी। उधा जवाल
कैं संग ना चालौं ॥ लेष जनम रा ना टलै
है सख्यां। रवचन रांसी भणौं। रजी मेरी
कोट भवन सरस सुंदा ॥ भीव घर झनलार हों
जो चौसां में जोरांनी हे सखी। घर में अंब
का पुजवाली। रजी रजी रांसा कहै सुरा

राजा जी ॥ अब कांई सोच बिचारो। श्री कृष्ण हर

बारा लागा॥ डाहल लागा थारो। रासौं कहै

कुंरसौं राजा जी। होरा हार कुंण भेंटे, म्हे

तो पडदैरा मांराम। करम कीया पांरै बेटें।

कवर चढो तीस पाल रौं। मुंछो हाथ लगाय

थपा अंग मांवै नही। थांडो सो है बीजल सारो।

अजल गैंडारी ढाल॥ कडां कटांरी बांकरौं॥

कांधै लाल कबांण। रजी रजी कवर चढो

राजा भीवरो जी। चढो छै रुकम कवार हो।

झिल कत ढाल फरु कत नेजा। घरा जोधा साथ

हो। रजी रजी मेरी चंद वधन चडो भाली॥ वो

गवाली यो लियां जाय हो। रुकम सहै हगवाल

भडवाल्यो थांरा निजर गुदराय हो। रजी

रुकम कवर सीस पालजीनें। हो का जोडां बिनवै।

माफरा चोरज जवालिया। आप कोई अरस तर हो।
चढ्‌यो चढे संग्राम सुरवां। चढो न लावो वार।
गवालीये नै न जावरान देउं॥ भीव लेरांरी
आंरा॥ कृष्ण तरो रथ जाय पोहतो। जाय
बांरा चलावो। पैली गदा स्यांम नै फेंकी। धजा
फरक की जाय। जद श्री कृष्णजी रथ से उतरया॥
चोटी पटा कापया। मोंधां मुंड मुंछ की मुंडी।
रथ रै सुर लगायो। आगे स्नेह करी भगतांरी।
[illegible] अरज अब म्हांरी। भीव जोरा कर सुनो
बगत दो॥ आधर म्हांरो भाई। पदम भोत मनावे
पाय लागुं। रुकमणी हाथ छुडावे। वृजराज
सुंणो म्हांरी बीनती। जादुनाथ सुणो मेरी
बीनती॥ अब बांह छुटे समरथ वीर की।
जब बोले जादुराय। हाथ नहीं छोडसां।

रुकम कंवर कुम्मीर ॥ हाथ नहीं छोडसां
हाथां सें वाग्यो स्तार ॥ हाथ नहीं छोडसां।
वसुदेव देवकीरी वीनती। नंद उधोजीरी वीनती।
छपन क्रोड जादवांरी वीनती ॥ तेतीस क्रोड
देवतांवांरी वीनती ॥ नवनाथसिधांरी वीनती
पांचु बोहण पांडवांरी वीनती। जोत पदमईमे
गाईयो ॥ इलधर जी हाथ छोडाईयो ॥ ४५ ॥
कहे कवर जी सुंणा सीस पाला ॥ म्हे तो
धराई कुभा। माथो मुंड मुंछ वी मुंडी ॥
रुपा थामे कर पाई। चढो चढो संग्राम सुरवां।
चढो न लावो वार। जवालीमें नें जांरा न
देऊं ॥ जुरासंधरी ज्यांरा ॥ कृष्ण लसौ रथ जाय
पोहतो। जायर बांरा चलाया। सर दंतेसर
बारा चलाया। टोल गया टंकारा। नेंम नाथ
जी बारा चलाया। जाय पडो जब राजा।

जाय पड़ो राजा धरती पर दंत बदंता राजा॥

कामरबो क्यों मारबो। मरबो अबकी वार। भाई

पड़ंतो जांजरी। वीगर गई सब वात। नैण

मौसीसपालरा। नैहा लोचन लाल गुलाल।

राम दीयो कुंजनापुरी॥ भाभी हंदो सिंणगार॥

भाभी हंदा बोलणा। नीसर गया दुसार। बैर

बहोडो भाई दंत रोतो राजा सिस पाल।

धुग धुग मारु दोरणावा। तो राजा दमघो

षरो फूल। दोरणु लिष लिष दल घर पै भेजौ

भीष पीरीयो चावै। अे मोसर भाजणा री

णांही सनमुष जुध मैं आवैं। जब श्री कृष्ण

हा दृषज कोरी॥ दाय देवता बुलाया।

सार सम्हा हो जुध मे आवो॥ होसी

फतै तुमारी। कहैं अरज न सुणा कृषणाजी

एक अरज अब म्हांरी। मसतक हाथ मेलं सोई॥ दांसु सबें सिंधारीं। कहै गरोसो सुरग बलभद्र। एक अरज अब म्हांरी॥ उलटा काल जांनपुंलावें। देव हामारा हाथो। झमटी करें गरोसो डोलें। मंडग्यो हाथ्यां मांही। पकडे सुंड अलगो गेरै॥ और कडली सी तोडें। धौंकल सिंह भंन मारभनें। मंड गयो माल मील मु केरै। पकडे सुंड अलगो गेरै उधर उधर फेरै हाक कीवी अंजनीके पुत्र जाय पडा सब राजा जाय पडा राजा धरणी पर रांभेलरे राजा बोहणा पांच पांचरें मांहि हलधर जी सिंधारें हाथ कर त्रशुल जोगणी बेत आपरा संभालों औलां जु जोला औसरीपी चालें चक्र अल बांरण जाय जांनरे मांहि जोधा मैं मची रांवरणा घांरणी कहै जरासंध सुरण सीसपाला दोय देवता कृष्ण मैं॥

छपन क्रोड जो कुंद पडै तो॥ चिपटी सुं मल गेरै॥ कहै सीसपालो सुंसो जरासंघ जुरा भुवानें बुलोवे। पांच सात कोई भुवा करोते॥ तोई जीवता जावो। कहै सीसपालो सुंसो भुवाजी। एक अरज अब म्हांरी॥ म्हांरी वाय करो भुवाजी॥ दल देवांनें पावों॥ डंम डंम वाजा जुरा रा वाजै जुरा मारती आवे। कितरा नैं आ पकड पछाडै॥ कितरा जोधा खावै। दस जोजन मैं देह उरारी॥ पांच जोजन में हाथ। चार जोजन में माथो॥ दोय जोजन मैं दांत। राम रांम रुारा देव पुकारा॥ जुरा रांड सो कोपै॥ दांसा घेतो जुध कर जीता॥ वै है मैं जीता थोडै॥ कहै हलधाजी अब सुंसो कृष्णाजी। रांड सबा नें भोंडै। हल सुं तो वैरा पाव मरोडा॥

मुँसल ठरकावौं । पदम भगतरी बीनतं । जरा मार

दल आयो।४२॥ संभ पंचायण वाजी थी । शवजी

हरख मन मोहि । फलै हुई मारा जरी । जीता

त्रे भवन राव । मार असर संकथी सब मेटी ।

भाग गया डाहल राव । कहै जरा संध सुंणा

सीस पाला अब तो कसर न कोई । पोहराजी

भांशावे दल बचाया॥ दोय जीवतो चाल्या

कहै सीस पालो । सुणो जरासंध ॥ हुई खेम

कुसलाई सतर वार भाजग्यो आगे ॥ अब कै

पे उठ चालो । देस देस में चिठी फीरावो । नवा

तखत कडवावो । नवा तखत कडवायसो ही॥

बाल कीया वेठावो ॥ काको भतीजो दोउं ऊठ चालीया॥

मगावो भेख वराग्य । रवाजे कर नौबडे ॥

मोरी हुंय कर चालो । तखत चंदेरी पोची थाई ।

जेवर॥ कहां वागा दुलांमी का॥ कहै दुपटा वींदणी का। कहां तेरी गरब की बोली। कहां तेरी पाग अरा मोली। अरे सीसपाल सुरा देवर। कहांरे सोय दीयो जेवर॥ कहां तेरे कांन के मोती॥ कहै नाभी वयेन रोती। मेंदी तेरे रचलां हाथां। अबे क्युं वीरलो माथो॥ कांकरा थारे पाव में सो हे:॥ अबे क्युं करम नै रोवै। जदो उं ब्याहवें आयो अबे क्युं भाज कर आयो। सबै तेरे करमा की वाजी॥ कुंडो मत रहो अबे राजी पदमण कावडा पुरा। मराय आयो थ्य सब सुरा॥ अरे सीसपाला सुंरा देवर। कहां ले सोयदी जेवी। वनी थोरी वनडी निरवरा आई:।

सोच करेडी मैं बैठा॥ काको भतीजो दोउं बोल
थोई। आपस मैं वतलाय कहै जरासंध सुंरा
सीसपाली। कैक हाथी घोडा होता॥ अब
तो कछुन कांई। कहै सीसपालो सुरगा जुरासं
एक अरज मांहोरी। सतरै वार भाज गयो
आगै। अजु करां सब ठाव। दरम भौत भागवै
पाय लागुं। भावज अब वतलावै।४५॥
अरे सीसपाल सुरग देवर॥ कठेरै थोय दीया
जेवर॥ कहां सुख पाल रंग भीनी॥ कहां किंन
दांन कर दीनी। कठां तेरै साथ के साथी॥
और दुगपाल जै हाथी: कठे तेरी चढण की
घोडी। कठे तेरै पांव की जोडी॥ कहां कुल-
हन गमाय दीनी॥ कहां किंन थोत करलीनी
अरे सीसपाल सुंरग देवर कहांरे थोय दीया

आछा वना किठे मेल बेठाई। कठे गयी
हस्ती घोडा॥ कठे लेरे दंते सर आई। कठे
गई थारी मोटी ठकराई। लें कठै लाज
गमाई। थारी वनडी निरखरा आई॥ आछा
वना किठें मेल बैठाई॥ किस्तीक रात दई
रुपमई यें। किस्तीक लाडी लाया॥ हल
मुसल सुं कीयो आरतो। हलधर जी धम-
काया॥ आछा वना किठे मेल बैठाई। सील
पाद्य सीलपाल डाहलरी। ले गया गवाल
उतार॥ सवा क्रोड रो हाथ मुंदरो। मुंदी
बालाईरो लाई। थारी वनडी निरखरा आई॥
आछा वना किठे मेल बेठाई। पेल पेलरा रूप
मराया। घर घर गाल कढाई। पदम
भाँ आावे पाय लागुं। मुहंगी वीर कराउं।
वना थारी वनडी निरखरा आई॥ आछा

वनी किसे मैल बैठाई ॥ दोहा :॥ ॥ वन वन
से वन न्हीं नंद गांव सें गांव ॥ वंसी
वट से वट नहीं ॥ श्री कृष्ण नांव नें नांव
। १ ॥ वनरी वन वान क वन्दों । भंवर करत
गुंजार ॥ दुलहन रांगी रुपमती । दुलो नंद
कुवांर ॥ विस करमा नें अज्ञा दई ॥ कुंजन
पुरी वणाय । जैसें कुंजन पुर अजागलो । जासें
अधक वणाय ॥ परम कहै अब तोरण होलो ।
भींवं तेणारी पोलां ॥ तोरण आयग्या बृजराज ।
जोबे पंथी दल जोईयो ॥ भींव तेंणा चातार ।
धन बाई रुपमता भाग कुमारो ॥ वर पायो गोपाल ।
तोर आयग्या बृजराज ॥ हरषो कुंजनपुर तेंणारो
गावें छे मंगलचार ॥ हरषो राजा भींवजी
विप्रां नें देछे दांन ॥ तोरणा आयग्या बृजराज :॥
॥ दोहा :॥ ॥ मोती वारां वनें पर हीरा वारा है ।

तन मन धन सारो वारां है बने पर मोती
वारां है तुम हो चंद दुलीयारो है। बने पर मोती
वारां है। पदम भौ मागके पाय लागुं॥
जा दुजरात पधारो। बनों जादु वरनो। गिरधारी
बनों। नंद जैसी छावो। म्हांने प्यारो है राज॥
प्रभु मैलो कांम करां घा मांही म्हांरो जीवरो
जीरयो मोहि है राज। सहियों प्रभु म्हांनें
सब जग लागें बारो॥ गिरधारी लागें प्यारो
है राज॥ सहीयां॥ प्रभु थांरै सीस मुंगट सीर भारी,
म्हें सांवली सुरत पर वारी हो राज सहियां है
गिरधारी बनो म्हांने प्यारो है राज। सहियो प्रभुं
थांरै कांनौं कुंडल छीब भारी। भगत पदम बल
हारी है राज सहीयां॥ दुजा कांमता:॥ इन्हा है
सहीयां चीनहा है सहियो॥ कांमराजीया कर
लेलां राज। सीलवाल सिंधारयो। धुजी लारयो।

द्रोपदी चीर वधारयो राज। जल डुबत गज
राज उबारयो नख पर गीर वर धारयो राज।
एसा वृज नंद दुलैनैं॥ कांमरा करबी आई राज॥
कांमरीया कर सोनवडा हो हद्धरा वीरा हो
राज। एसा वृज नंद दुलैनैं॥ कांमरा करबी
आई राज॥ तोरण जोधी सब पंच आया। सब
जात मिल आया। गणपत सीरसा भयी जनेती
मुंसा बांहराच लाया राज॥ ऐसा वृज नंद
दुलैनैं॥ कांमरा एक करबी आई राज।
सात सखी मिल तिलो लागा। सात सखि
मिल लाई राज॥ तो मांहरा कांमरा वत
कर राखुं॥ सुंवो कर बैठावां राज॥ ऐसा
वृज नंद दुलैनैं। कामरा करबी आई राज॥
सांसी साज आरती लाई। दिवले जोत लवाई
राज। पांच पदारथ थालमा आरतें॥ मगल
पदम बजहारी राज॥ एसा वृज नंद दुलैनैं॥

जामें। ऐसे दुपटे सुं धुल लागा। हो गिरधर

नें कांमण करसां कांमरीयी अलल सरी सुधण।

रेसम नाडें राचे। कांमरीया री दुर जोया जोडी।

पावन पड छीब वाजें। जब रघुनंदन तोरण

आयो। करो सहेल्यां मनके भाऐ:॥ अतलुना

मायोरी जोडी। बांधी सवा लाख की बोडी। कांमरी

या धुल लागा॥ कांमरीया री रथ वाहन सोहे॥

और घोडा सब हाथी। कांमरीया सुष पाल-

ना लाबी। और जादुवर का साथी। सुर जन मुनि

जन पोहल घर का कुल दीपक और जादुवर का।

ससतर षंडे बांडे डेरे डांडे॥ कामरीया धुल लागा॥

कांमरीया चोवे में मीना। जो कोई अतर लागावें

कांमरीय फुलन में राचें। जे कोई गुंध पीहरावें।

मंगी कानी आंरज भामी। यंत्र मंत्र मैं लबही पावी।

कांमरा करबा आई राज: ।१।। कांमरावामण

।। दुहा:।। रुपमरा जीरी सहेलडां कांमरा गारी

नारी जादुपत महाराजनै ।। कांमरा करसो।

जाय:।।। यंत्रलिष पिच रंग पचरी में।

सहीयां है।। अब गीरधरने कांमण करसां।

जादुवर नें कांमरा करसां: कांमणीया

सीर पेच किलंगी। मुषतै उरसे सो है।।

कांमणीयाना लो के मोती। भाल तिलक

मन मोहैं।। अंजन पुज में मुष बीडी में।

मधरी मधरी वेनन मैं। कांना कुंडल सो

अत भारी धुंट रही लट घुघर वारी।।

कांमणीया फुल लागा। हो गीरधरनैं कांमण

करसां।। कांमण कीया कंठीयें हरि।। औ

मोतन की माला। कांमणीया कर कडे

मुंदडी। औ वाजु बंध छबवाला।कम

पेस अंग कडे कटारे। मोर मुंगट कोरी

औ्री सहेला की गत न्यारी सोदे बुला कांमरा

गारी ॥ कांमराीयी धुरलागा:॥ नवल

ननेरी भुवा बाई ॥ कांमराीया सब। जांरी

रतन जरत कंचन कै पीजरै। सुवोका

वैठाकां ॥ वनी कहै लोई मन भावै॥

पाव पडांताडी लां आवे। रंग मेल मै

वास कराउं ॥ तो कांमणारा परचा

पाउं ॥ हे गीरधर नें कांमणा करसां राज:॥

फेरां कृष्ण पधारीया। सीसर उपीवाा हार॥

फेरा चारा जो कारला॥ भीतर कृष्णा पधार॥

कृष्ण रुपमराी आंरा वीराजा। रतन जडत

चवरी रची ॥ उगराा दिसा राजा भीव विराज्या॥

पछम जाउंराय ॥ ब्रमा मोत्यां चोक पुराये।

कलस गरोस पुजाये ॥ कहै ब्रमा अब सुरो

भीवजी ।। विप्रांमुंर दिरावो। नंद वसुदेवजी
मुर दिरावैं।। भर भर झोल्यां देवैं: । छपन
कोड़ जादु मुर दिरावैं। भर भर झोल्यां देवौं।।
कहै ब्रमा अब सुणो भीवजी। पीला हाथ
करावो।। नागर पांन मंगायलो। फेरा
कृष्ण उठावो ।। पेहलो फेरो हर लीयो।
सरवो रुषमईयैंरै हाथ ।। दूजो फेरो हर
लीयो जादुपत महाराज:। तीजो फेरो हर
लीयो:।। सरवो रुषमईयैंरै हाथ। चोथो
फेरो हरलीयो।। डावे रांहसा करावो।।
डावैं अंग अमु जद हुं आउं ।। तीन
वचन अब पाउं ।। कहै कृष्णजी सुणो
लिषमीजी। थे मांगो सो देवां सोलैं
हजार एक सो आठ म्हारे रांण्यां। कदीयैं
जौंमें लुं पट रांणी ।। चांद सुरज जब

लग तवै । अषड सवाग लुंभारो ॥ बावै अंग

बाई रुषमराा आवै ॥ ब्रमा वेद उचारे ॥

परम भरो भरावे पाय लागुं ॥ हथेलेवो

भीव छुडावै । हथलेवो छोडावै राजा

भीवजी । हाथी घोडा पालषी थे मांगो

सो देवां ॥ हाथी घोडा घारे घरणा ॥

देवांनी गऊवांरो दांन । हथलेवो छोडावै

राजा भीवजी ॥ दीनी दीनी गऊवां क्रोड

दासां दीनी सात सै ॥ वै रुषमरारी साथ ।

परम भरो भरावै पाय लागुं ॥ जादु जांन

जीमाय ॥ म्हारै जादु जीमरा आया ।

राजा भीवरै मन भाया ॥ पनरा चोकी

मंगावो । ऐसो वन थाल धरावो । जादवांरै

आगै धरावो ; मुंग भात मंगवावो ॥

लुलवीलाप सीलावो ॥ पांरो जुं घृत

बुहावो। म्हांरै जादु जीमरा आया॥ राजा

भीवरै मन भाया। जीमो कृष्णजी लपसी॥

थांरै साथे सदाशिव लपसी॥ म्हांरै।

जादु०॥ जीमो कृष्णजी सीरो॥ थांरै

साथै हलधर वीरो॥ म्हांरै जादु०॥

केर करैली भाजी॥ अब कोन कडी तेरा

म्हांरै जादु०॥ जीमो कृष्णजी लाडु थारै लाडी

पांचु पांडु॥ जादु०। जीमो कृष्णजी खाजा।

थे चवदै भवनरा राजा। जादु०। गारी

गावै कुंजनपुर री नारी। वहै भर जोवन

मतवाली हो कृष्णजी नवरंगी माय

कुमारी हो कृष्णजी॥ कुंता मुवा कुंमारी।

वहै जयो करता कुंवारी हो कृष्णजी।

नवरंगी मा कुंमारी॥ गारी गावै कृष्णरी

सारी॥ थांरी वैन सो दरा कारी॥ अरजन संगी कुवारी हो:॥ कारो कारो कृष्ण रा कारो। औ तो होय बड़पन को बालो॥ वसुदेव देवकी जायो:॥ जसोदा रो लाल कहायो। कृष्ण जी। नवरंग माय तुंमारी॥ जारी जावै कृष्ण री सासू॥ वैरै पड़ै प्रेमरा आंसु हो कृष्ण जी। नवरंगी माय तुंमारी। जस पदमई पै गाया जांन सबै मिल चाया। जांन जीम डेरै गई मैल पधारै कृष्ण। रुषमणा जी री सहेल डा॥ ले चली जब मैल॥ रतन जरतरो बिछायो ढोलीयो॥ सोड गैंडवो बिछाया॥ कृष्ण रुषमणी आंरा विराज्या॥ वां जादुंराया सो सो कांमणा दुवा नांवै॥ कृष्णाजी देवै

वताय॥ कृष्ण जी दुवो एक ही नांवै॥
सखीयां मोडना भारी॥ लोडुं लाग इलायची
यांही। देवै हा भर भर खोल्यां॥ रूपमरा
जीरी सहेलडीनें॥ देवै हा भर भा खोली।
सखी उठ डेरै गई॥ पोढे जादुंराय।
परम भगत की बीनती॥ पोढे जादुंराय॥
रैण बीत परभात भये॥ सुंरीया जादुंराय॥
आलस नींद निवारजे॥ सिसट उपावरा
हार। बैठे सांम सिंघासरा दुलो॥ कवर
कलेवै हालोजी॥ उठे सांम जादुपत
राजा। संगलीया छोटा भाइजी॥ भीव
पोल आगे चल आरे॥ साथी लीया
साथरा साथी जी चंदन चो की वेग मंगावो॥
सोवन थाल धरावो॥ मोती चुर मगदरा
लाडु। नुघती दांरा लावो॥ कैर करेली
लोकु भाजी अब कांन कडी लेराजी॥

बैठे सांम सिंघासण दुलो॥ कवल
कलेवै हालोजी। दुलो सांम हाथ
नही घालै। रुषम कवर नैं लावोजी।
रुषम कवर वोही छै साजी। चोटी पट
कारजी॥ माथो मुंड मुंछ की मुंडी
रधरैं पीठ लगायोजी॥ ऊँ क्रष्ण जादु
पत राजा॥ रुषम कवर नैं वैठायोजी
हाथ पकड हर साथैं वैठायो। रुषम
कवर हरषायोजी॥ लै आरी सो हर
हाथ दिषायो मुंछ पर मुरलायोजी
बोहल भांत हर कीयो कलेवो॥ भीव
सेंरा मन भायोजी। पदम भणै भणावै
पाय लागुं। जुवैं रो नेग करावोजी॥
जुवैं षेलै छै:। जुवैं मिलाषेलीयै महा
की हासी॥ जो षेलै भीषम राज कुमार

गुवै मिल बेलीयै महाराज। रतन जड़त
मंगाई मुंदड़ी। सोवन कुंडी माहि धर
गुवै मिल बेलीयै महाराज विहारी।
हाथ श्री कृष्णजी घल्यौ॥ दोय कर
भीषम राज दुलारी। गुवै मि०॥ ॥ कहै
भीवजी सुत मांहरा सुणजो रुषम कवा
माई नैग बुलाय लो। पेह रांनी री वार
रतन जडतरो मंगायो ढोलीयो। सोड
बा विछाया। कृष्ण रुषमणी आंरा बिरा
वैठा जादुराया। छला छाप मंगायलो
मुंदडी॥ और सो गैहणौ लावौ। र
नेग में दोय करावो भठी लात दिरावो
लरां पोलाई रै नेग में। डाली दीना सोल
अरजन सुष पालनो लषी॥ वसुदेवजी नै
नंदजी नै हपसी दीनी। माहादेवजी नैं

दास्यां दीनी सात सै ही। वहाँ रुपमरारी लाय

राज। पदम भौ भागे पायलागुं। इतीकरी

समझांसा॥ कांकरा डोरलो ने ब्रमा दीनी

हो ब्रमा दीनी छै गांठ घुडलाय राधावर

डोरडो क्युं नही खुलै। डोरडो किन कांमण

बांध्यो॥ डोरडो क्यु नहीं खुलै। कुंजना मुररी

कांमरती। दै छै मोसां गाल। राधावर डोरडो

कुं नही खुलै॥ ब्रमा बोलै त्राकम वांसा।

लंकासे सांनो दांन देवां। जद क्यु नहीं कंप्यो

थारो हाथ॥ राधा वर डोरडो क्यु न खुलै।

ब्रमा बोलै त्राकम वांसा। नष पर गोरवर

धारयौ॥ गोकल लीयो छै उबार। राधावर

जद क्यु नही कांप्यो थारो हाथ। राधावर

डोरडो क्यु नहीं खुलै। ब्रमा बोलै त्राकम वांसा।

नष सें उदर विदारीयो। लीयो पैलाद उबारी।

राधावर कंयु नही कंपो थारो हाथ। जद
श्री कृष्णजी दखज फेरी डोरडो आपके
ही घुल जाय। राधावर डोरडो कंयु नही
घुलै ॥ दुहा ॥ पात पडंतै युं कह्यौ।
सुणतर वर वणराय ॥ अब कैंबीछडे कब
मिलै। दूर पडंता जाय :१। कहै तरवर
वणरायनैं। सुणो वात इक वात। या घर
याही रीत है। इक आवत इक जात
मिलणा भलो बिछडन बुरो ॥ मिल बिछडो कोय
फिर मिलबो हस बोलबो। रांम करै जद
होय।४॥ निकासी के गीतरा। गाजके
मंगौ दांन ॥ अबै रुखमण साहरै जावै छै।
अब मेलो करलो आज। मेलां सायणा सेहलडां
अब मेलो करलो आज ॥ फेर मेलो अवतार मैं:
बाई रमता राज दवार। रुखमण यालै सासरै।

वीरो बाईरो धुर धुर साथ। मेलो माता म्हारी।
रांरी मेलो करलो आज। रांरी रुघमरा कुं
मीलै॥ मिल छै बांह पसार। गल बांहियां
छोडै नही। रांरी रुदन करै छै अपार। रुघमण
चालै सासरै॥ अब मेलो म्हांरी भावजां॥
भावज मेलो करलोनी आज। पांचु भावज
कुं मिलै छै बांहि पसार॥ किणनें म्है पुछो
वाल हो। किणनें कहां म्हे आथ॥ आतो
कुं जन पुर। सैहर सारो म्हांने लागै उदास उदास॥
म्हांनें बाई रुघमण चे ले चलो॥ दास्यां रहलां
म्हे थांरे पास। रुघमण चालै सासरै। अब
थे पधारो म्हांरी भावज्यां॥ करजो राजारी टैल॥
म्हांरी आसीस जो लागजो॥ अचल रहजो थांरो
राज॥ रुघमण॰॥ अब मेलोरे बंधु म्हांरा। मेलो
करलो आज। पांचु बंधु कुं मिलै। बंधु मिलै छै

बांहि पसार। गल बांहियां छोडै नही॥ बंधु चोरै चोरै

साथ। रुषमण चाले सासरै॥ अब मेलो राजा भीवसे।

मेलो करलो आज॥ राजा रुषमण मुं मिलै। राज मिलै

छै बांहि पसार॥ गल बांहि छोडै नही। रुदन करै

छै अपार॥ रुषमण०। अब रुषमण राजा सें वीनती॥

राजा सुराजो म्हांरी वात॥ भगत पदनी थांहरी रही।

राजी तपोनी जवीयो राज॥ रुषमण०॥ अब मेलो कुंजन

पुर सेंहर रो॥ अब मेलो करलो आज। पडा पडा

रुदन करै। रुंषांरा तुंटै डाल। पात झडै जड युं पडै॥

अब कद होली अवतार। अब आडा डूंगर किरा

दीया। किरा रोपी वरारायं। रुषमण माता सें

वीनती। म्हांरो गुंडी वांरो बुगच्यो हाथ। दीजो

राधवा सहेलडा। अब बे पधारो॥ बाई द्वारका।

म्हांरे मुख सें कह्यो न जाय। धाय मुंर छागल जाय पडी।

अब कद होली अवतार॥ रुषमण०। अब रथ बैठी

बाई रुषमणी॥ अरजन रथनें हांकै। जान पदमइ

गाई थी ॥ थारी भगतीरो अंत न पार । रुषमणा जी लै
सासरै ॥ कोई गावै । कोई सुणै सोवै कुंठ जाय ॥
कायारा पातक झडै । पाप विलै हुय जाय ।
गीता भागोत जो सुणै रुषमणा मंगल एक । नर
नारी गावै सुणै मन मैं आंणा विवेक ॥ अरसठ
तीरथ न्हाइये । रुषमणा मंगल एक ॥ कोड गऊ
जो दांन दै । जासें अधको पुन ॥ इति श्री कृष्ण
जी रुषमणारो ब्याहलो संपूर्णः ॥ सम्मत १९०८
मिती पोह वद १० ॥ जब लग मेरै अड गहै ॥
तब लग ससीहर कपूर ॥ जबलग पोथी रहै सदा ॥
॥ रहै जो गुणा भरपूर ॥ ॥ शुभं भवतु ॥
॥ कल्यांणमस्तु : ॥

॥ श्री गणेशायनमः । ॥ एक दिन समाजोगरै बिषै राजा भोज माघ पिंडत सैल सिकार गया था । सु आगता मारग भुला सु प्रापत मैं राजा भोज माघ पिंडत दोनु बीचार करण लागा :॥ आ पां मारग भुला : । कीणनैं पुछां इतरै माघ पिंडत अरज कीवी : । माहाराजा धिराजाजी एक षेत गवांरो डोकरी रष वालै छै :॥ तिकै नै पुछां : । तारै राजा भोज फुरमायो : । हालो पुछां तारै दुनै असवार घोडा दउ-वरायनै गया :॥ जायनै कहो रांम रांम डोकरी : कहो आवो वीरा राम राम : । तारै दोनै बोलीया : । बाई ओ मारग कठै जासी : । तारै डोकरी कह्यौं ओ मारग ताई वैहीज रैसी : । उपर जीरै छै तीकै जासी : ।१॥ बीरा थे कुंण छो :॥ बाई मैं तो वाटाउ छां :॥ तारै कहो वटाउ तो दोय : । तीकै कीसाये कतो सूरज दुसरो चंद्रमाः थे कीसा वटाउ छो : । बीराजी थे साच बोलो : । थे कुण

छो:॥ बाई मेतो छां प्रांहुंणा: प्रांहुंणा तो दोय
तीके बीसा:। एक तो धन दूसरो जोबन:।२॥
पे बीसा प्रांहुंणा छो:॥ वीरा साच बोलो पे कुंरा
छो:। बाई मेतो राजा छां:। राजा तो दोय तिके
बीशा एक तो इंद्र: दुजो जम: ।३॥ पे बीसा राजा
छो वीरा साच बोलो पे कुंरा छो॥ बाई मेतो छां
भारी छमा॥ भारी छमा तो दोय:। तिके बीसा एक
धरती दूसरी स्त्री ।४॥ वीरा पे बीसा भारी छमा
छो वीरा साच बोलो पे कुंरा छो:॥ बाई म्हे तो
साध छां साध तो दोय:। तिके बीसा एक तो सील
बीजो संतोष:।५। पे बीसा साध छो:। वीरा
साच बोलो पे कुंरा छो॥ बाई म्हे तो छां उजला॥
उजला तो दोय तीके बीसा:। एक तो पाणी दूसरो
साबू:।६। पे बीसा उजला:। वीरा साच बोलो
पे कुंरा छो। बाई मे तो परदेसी छां:। परदेसी

तो दोयलीके कीसा: एकतो जीव बीजो पांन:।६
वीरा साच बोलो थे कुरा छो॥ बाई मेतो छा गरीब
गरीब तो दोयलिके कीसा:। एकतो छालीरो
जायो बकरो: दुसरी डीकरी।८॥ थे कीसा
गरीब छो:। वीरा साच कहो थे कुरा छो:
बाई मेतो धवलां छो। धवला तो दोयलीके की
एकतो बलध दुसरी कपास।९। थे कीसा
धवला छो वीरा साच बोलो। थे कुरा छो:॥ बाई
मेतो मरीया छो:। मरीया तो दोय:। तीके कीसाएक
बादल दुजी अस्त्री॥१०। वीरा थे साच क
थे कुरा छो। बाई मेतो चतुर छो। चतुर
तो दोय तिके कीसायेकतो अंन दुसरो पांण
थे कीसा चतुर छो:। वीरा साच बोलो थे
कुरा छो॥ बाई मेतो छां निसुंग:। नीसुंग
दोय तिके कीसा। एकतो ईंद्र दुसरी अकुर डी

१२। बीरा थे कुंरा छो ॥ बाई मेतो हारीया
छां ॥ हारीया तो होय लिके जीरा रेके ता माथै
देंगा इसरो बेटीरो बाप:। थे जीरा
हारीया छो। बीराजी थे साच बोलो थे कुरा छो,
बाई मेलो न जोंरा छां। जांरां सुं तु हीज छै।
तारै डोकरी कहो:। श्रीराजा भोज छै॥ तु
माघ पिंडत छै। ज्योही मारग जावो:॥
इति श्री राजा भोज माघ पिंडत डोकरी
री वात संपुर्ण:॥ शुभं भवतु॥ संमत
१९०८ मिती माहा वद ७॥ लिषी वाचै
जैनु नीमसकार: रांम रांम छै॥ शुभं भवतु:।
ग्रन्तु॥